काव्य-प्रयोजन

काव्य-प्रयोजन का शाब्दिक अर्थ है — 'काव्य रचना का उद्देश्य'। भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य-रचना एवं काव्य-पाठ को दृष्टिगत रखते हुए काव्य-प्रयोजन पर विस्तृत विचार-विमर्श किया है।

आचार्य भरत मुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्य-शास्त्र' में काव्य-प्रयोजन पर विचार करते हुए कहा है कि! —

"धर्म्यं यशस्यं आयुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम्।
लोकोपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति॥"

आचार्य भामह ने काव्य-प्रयोजन की चर्चा करते हुए कहा है कि—

"धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिंच साधुकाव्य निबंधनम्॥"

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कलाओं में निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य की कीर्ति और प्रीति (आनंद) की प्राप्ति होती है। भामह के प्रयोजन व्यापक हैं तथा इनमें कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजन की चर्चा है।

Scanned with OKEN Scanner

आचार्य मम्मट ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'काव्य प्रकाश' में काव्य प्रयोजन पर विस्तृत विचार देते हुए कहा है कि, —

" काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए व्यवहार ज्ञान के लिए अमंगल शांति के लिए, अलौकिक आनंद की प्राप्ति के लिए और कांता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजनीय है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुख लेखक एवं आलोचक आचार्य शुक्ल ने 'चिन्तामणि' में यह स्वीकार किया है कि काव्य से व्यवहार ज्ञान होता है —

" यह कहना कि काव्य व्यवहार का बाधक है, उसके अनुशीलन से अकर्मण्यता आती है ठीक नहीं है। कविता तो भाव प्रसार द्वारा कर्मण्य के लिए कर्मक्षेत्र का और विस्तार देती है।"

संस्कृत आचार्यों की भांति हिन्दी के आचार्यों ने भी काव्य-प्रयोजन को लेकर अपने विचार प्रकट किये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

भक्त कवि गोस्वामी तुलसी दास ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्यात्मक रचना 'रामचरितमानस' में दो काव्य-प्रयोजनों की चर्चा की है।:-

(i) 'स्वांत: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।'

(ii) कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कँह हित होई।।"

द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कवि कर्म को रेखांकित करते हुए कहा है:- "केवल न मनोरंजन कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

किंतु आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य प्रयोजन का प्रमुख प्रयोजन 'रसानुभूति' मानते हुए कहा है कि," कविता का अंतिम उद्देश्य जगत में मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।" उन्होंने कहा कि कविता केवल मनोरंजन के लिए नहीं होती अपितु "काव्य का परम लक्ष्य जगत और जीवन

के मार्मिक पक्षों को गोचर रूप में सबके समक्ष प्रकट करना है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति का काव्य प्रयोजन एक जैसा नहीं होता। आनंद प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है जिसे रसानुभूति से प्राप्त किया जाता है। यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगल की हानि एवं लोकोपदेश भी काव्य प्रयोजन हैं। आचार्य मम्मट द्वारा दिये गए काव्य प्रयोजन अधिक सर्वांगीण, व्यापक और व्यावहारिक हैं।

=